

ऋग्वैदिक काल UPSC 2026: Best Notes PDF + PYQs (Prelims & Mains)

स्रोत (Sources)

- NCERT (प्राचीन भारत का इतिहास – कक्षा 11, रामशरण शर्मा)
- एनसीईआरटी (कक्षा 6 – हमारा अतीत-I)
- उपेंद्र सिंह – A History of Ancient and Early Medieval India
- रोमिला थापर – The Penguin History of Early India
- डी.डी. कोसंबी – संस्कृति और सभ्यता का प्राचीन इतिहास
- [पी.आई.बी. \(भारत सरकार की पुरातत्वीय रिपोर्ट\)](#)
- ARC रिपोर्ट्स (प्रशासनिक पहलुओं के लिए – सामान्य संदर्भ)

परिचय – UPSC प्रासंगिकता

ऋग्वैदिक काल प्राचीन भारतीय इतिहास का वह चरण है, जब हिंद आर्यों का भारत में आगमन हुआ और वैदिक सभ्यता की नींव पड़ी। यह काल न केवल भारतीय संस्कृति, धर्म और सामाजिक संरचना के विकास के लिए मौलिक है, बल्कि UPSC प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रीलिम्स में इससे प्रतिवर्ष 1-2 प्रश्न पूछे जाते हैं, जबकि मेन्स में वैदिक संस्कृति, सामाजिक विभाजन और आर्यों के आगमन से जुड़े सैद्धांतिक प्रश्न देखने को मिलते हैं। इस लेख में हम ऋग्वैदिक काल **UPSC** की दृष्टि से सम्पूर्ण विषयों – हिंद आर्यों का आगमन, कबीलाई संघर्ष, पशुपालन एवं कृषि, कबीलाई मुखिया, कबीला और परिवार, सामाजिक विभाजन, ऋग्वैदिक देवता और कालक्रम – का गहन विश्लेषण करेंगे।

परिभाषा – विभिन्न विद्वानों के दृष्टिकोण

1. रामशरण शर्मा के अनुसार – “ऋग्वैदिक काल वह समय है जब ऋग्वेद की रचना हुई, जिसमें आर्यों के कबीलाई जीवन, पशुपालन और युद्धों का वर्णन मिलता है।”
2. रोमिला थापर – “यह काल उत्तर-पश्चिमी भारत में आर्य भाषी जनजातियों के प्रवास, संघर्ष और स्थापत्य का प्रतिनिधित्व करता है।”
3. डी.डी. कोसंबी – “ऋग्वैदिक समाज एक कबीलाई, अर्ध-घुमंतू समाज था, जिसमें पशुपालन प्रमुख था और सामाजिक विभाजन अभी स्पष्ट नहीं थे।”

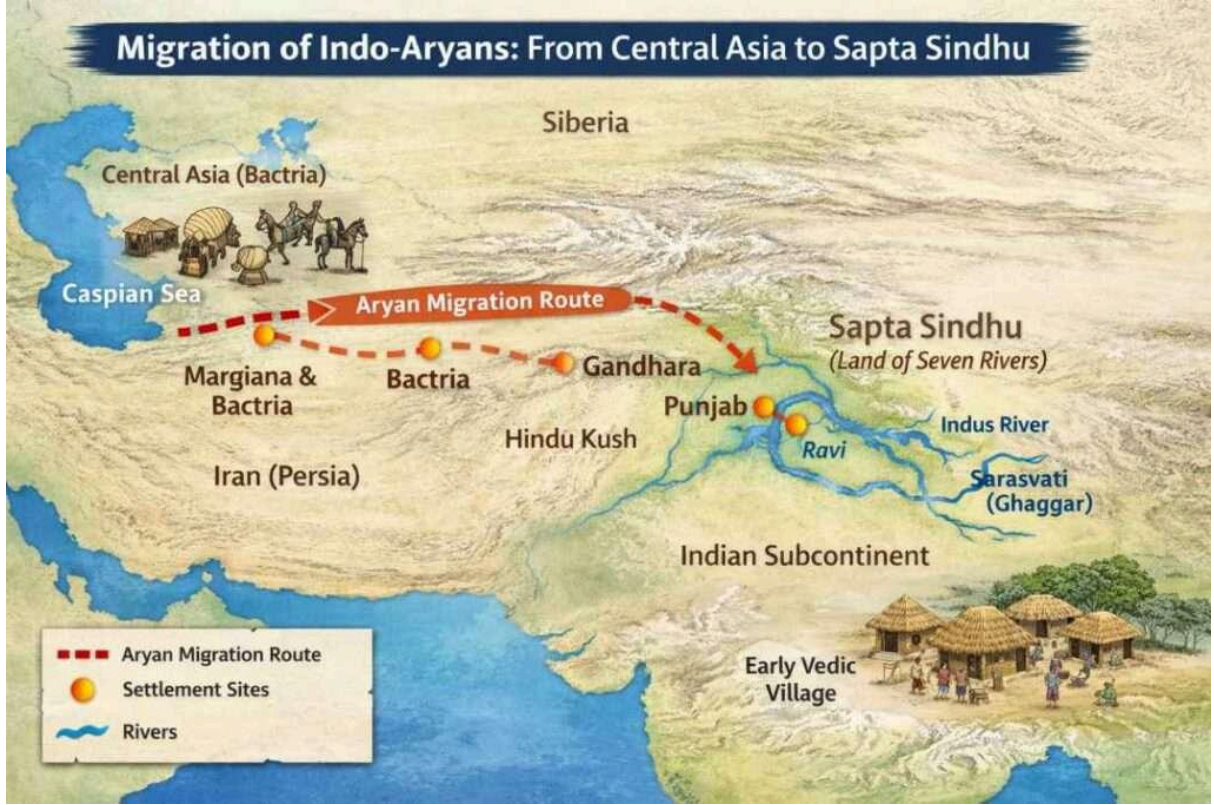
UPSC नोट: ऋग्वैदिक काल (लगभग 1500-1000 ई.पू.) वैदिक युग का प्रारंभिक चरण है, जो ऋग्वेद – विश्व के प्राचीनतम धर्मग्रंथों में से एक – पर आधारित है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं क्रमविकास

1. हिंद आर्यों का आगमन

- आर्य शब्द का अर्थ: संस्कृत में ‘आर्य’ का अर्थ ‘कुलीन’ या ‘श्रेष्ठ’ है। यह नस्लीय न होकर सांस्कृतिक एवं भाषाई समूह था।

- प्रवास सिद्धांत (**Migration Theory**): अधिकांश विद्वान (मैक्स मूलर, बुरो, रेनफ्रू) मानते हैं कि हिंद आर्य मध्य एशिया (स्टेपी क्षेत्र) से ईरान, अफगानिस्तान होते हुए 1500 ई.पू. के आसपास भारत के उत्तर-पश्चिम (सप्तसिंधु क्षेत्र – सिंधु एवं उसकी सहायक नदियाँ) में आए।
- स्वदेशी आर्य सिद्धांत (**Indigenous Aryan Theory**): कुछ विद्वान (भगवान लाल, एस.आर. राव) सिंधु घाटी सभ्यता को ही आर्य सभ्यता मानते हैं। हालाँकि, UPSC परीक्षा में प्रचलित दृष्टिकोण आर्य प्रवासन का है, लेकिन परीक्षा में दोनों सिद्धांतों की जानकारी अपेक्षित है।



2. कालक्रम

कालखंड	अनुमानित तिथि (ई.पू.)	मुख्य विशेषताएँ
प्रारंभिक ऋग्वैदिक	1500-1300	सप्तसिंधु क्षेत्र, पशुपालन प्रधान, कबीलाई संघर्ष
उत्तर ऋग्वैदिक	1300-1000	गंगा-यमुना दोआब की ओर विस्तार, कृषि का उदय, वर्ण व्यवस्था की शुरुआत

नोट: ऋग्वेद की रचना 1500-1000 ई.पू. के मध्य मानी जाती है। बाद के वेद (साम, यजु, अथर्व) उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) से संबंधित हैं।

मुख्य अवधारणाएँ – गहन विश्लेषण

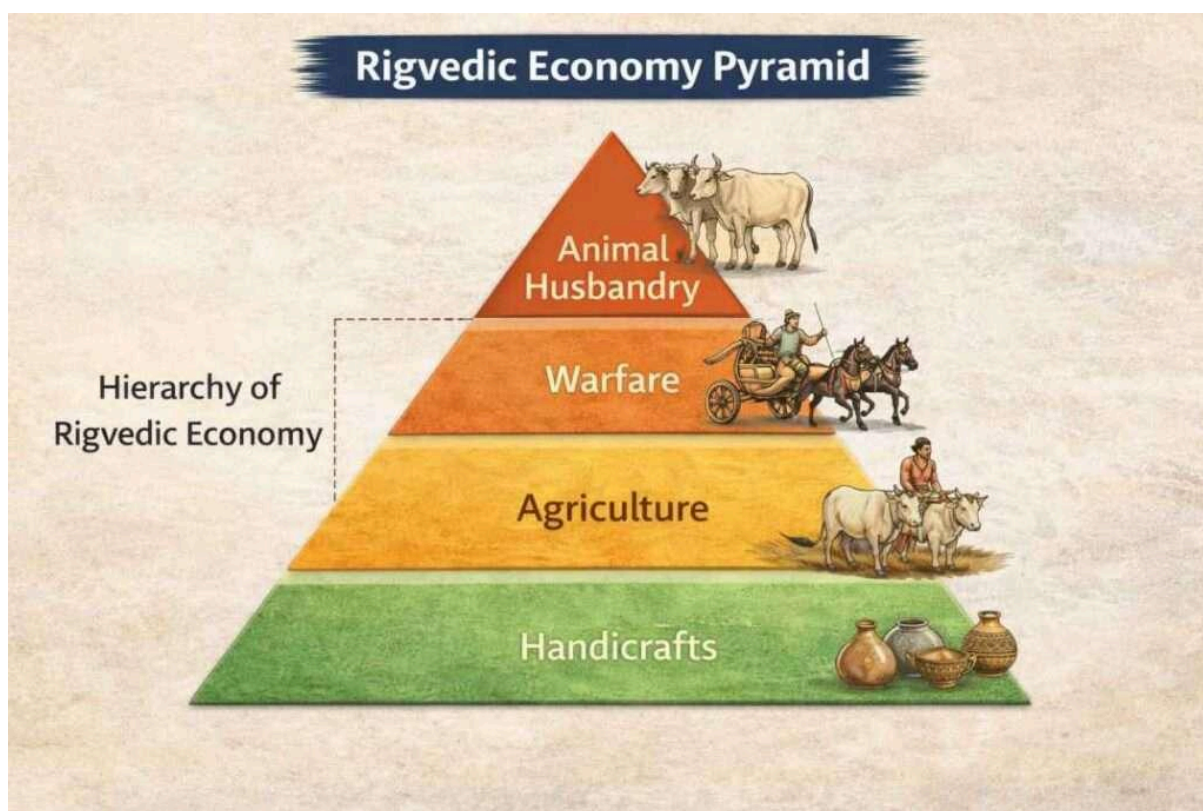
1. कबीलाई संघर्ष (Tribal Conflicts)

ऋग्वैदिक आर्य आपस में तथा स्थानीय अनार्य जनजातियों (दास, दस्यु) से लगातार युद्धरत रहते थे।

- प्रसिद्ध युद्ध – दशराज युद्ध (**Battle of Ten Kings**): ऋग्वेद (मंडल 7) में वर्णित यह युद्ध सरस्वती नदी के तट पर हुआ। सुदास नामक त्रित्सु जनजाति के राजा ने दस जनजातियों (पुरु, यदु, तुर्वश, अनु, द्रुह्यु, आदि) के गठबंधन को पराजित किया। इस विजय ने भरत जनजाति (जिसके नाम पर 'भारत' पड़ा) के प्रभुत्व को स्थापित किया।
- अन्य संघर्ष: आर्यों और दस्युओं के बीच युद्ध – दस्युओं को 'अनार्य', 'अव्रत' (जिनके कोई व्रत नहीं) और 'अयज' (यज न करने वाले) कहा गया।
- **UPSC** कोण: ये संघर्ष आर्थिक (चारागाह, पशुधन) और राजनीतिक (प्रभुत्व) कारणों से हुए। बाद में कई अनार्य जनजातियाँ आर्य समाज में शूद्र या आदिवासी के रूप में समाहित हो गईं।

2. पशुपालन और कृषि (Pastoralism and Agriculture)

- पशुपालन (प्रमुख व्यवसाय):
 - गाय (अघ्न्या – अवध्य) सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी।
 - घोड़ा (अश्व) – युद्ध एवं बलि में प्रयुक्त।
 - भेड़, बकरी, ऊँट, कुत्ते का भी उल्लेख।
 - पशुओं की संख्या ही धन का मापदंड थी।
- कृषि (गौण व्यवसाय):
 - हल (सीरा) और बैलों का उपयोग होता था।
 - जौ (यव), गेहूँ, दालें उगाई जाती थीं।
 - 'सीता' (हल की रेखा) देवी के रूप में पूजित थी।
 - परिवर्तन: उत्तर ऋग्वैदिक काल में लोहे के उपयोग (श्याम अयस) से कृषि का विस्तार हुआ।



3. कबीला और परिवार

- कबीला (जन): सर्वोच्च राजनीतिक इकाई। जन के सदस्य 'जना' कहलाते थे।
- ग्राम: कबीले के अंतर्गत ग्राम (गाँव) होते थे, जिसका मुखिया 'ग्रामणी' होता था।
- कुल/परिवार: सबसे छोटी इकाई। पितृसत्तात्मक – मुखिया 'कुलपति'। परिवार संयुक्त होता था, पत्नी को घर की स्वामिनी (गृहपति) का दर्जा प्राप्त था।
- विश: कबीले के उपसमूह को 'विश' कहते थे (वैश्य शब्द की उत्पत्ति यहीं से)।
- सभा और समिति: दो महत्वपूर्ण सभाएँ – सभा (गाँव की सभा) और समिति (जन के वरिष्ठों की सभा)। ये लोकतांत्रिक अंग थे, बाद में राजतंत्रीय हो गए।

4. कबीलाई मुखिया

- राजन: कबीले का मुखिया, आजीवन पद। वंशानुगत नहीं, बल्कि सभा/समिति द्वारा चुना जाता था।
- कार्य: युद्ध का नेतृत्व, जनता की रक्षा, पशुओं की रक्षा, देवताओं को यज्ञ समर्पित करना।
- सीमाएँ: राजन के पास न तो नियमित सेना थी, न कर-प्रणाली, न कोई दंडाधिकार। उसकी शक्ति सीमित थी – वह 'प्रथम नागरिक' (प्रथम समान) था, निरंकुश शासक नहीं।
- सहायक पद:
 - पुरोहित (ब्राह्मण) – यज्ञीय अनुष्ठानों के लिए।
 - सेनानी (सेनापति) – युद्ध में सहायक।
 - ग्रामणी (गाँव का मुखिया)।
 - विशपति (कबीले के उपविभाग का प्रमुख)।

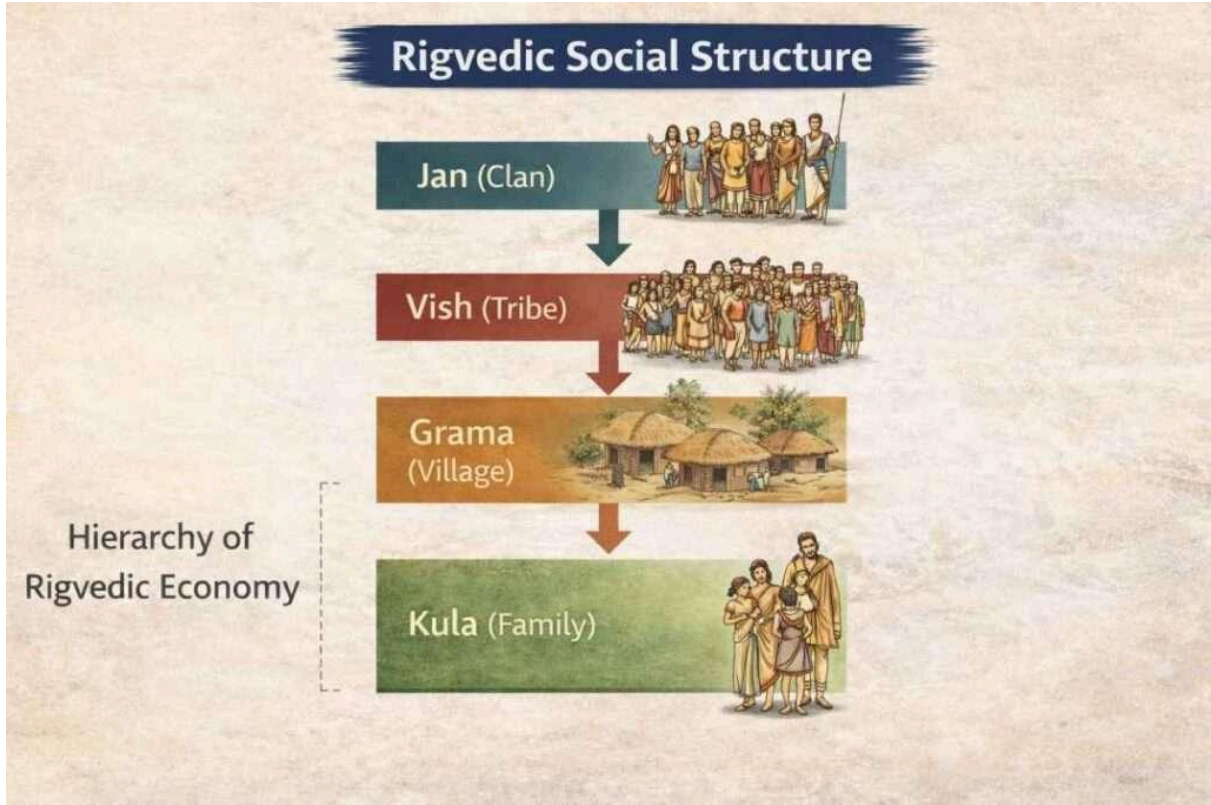
5. सामाजिक विभाजन

प्रारंभिक ऋग्वैदिक समाज में चार वर्ण स्पष्ट रूप से विकसित नहीं थे। बल्कि विभाजन मुख्यतः कर्म एवं जन्म पर आधारित न होकर प्रवृत्ति एवं कबीले पर था।

- ऋग्वेद का पुरुषसूक्त (10वाँ मंडल, 90वाँ सूक्त) – बाद में जोड़ा गया माना जाता है – चार वर्णों का उल्लेख करता है:
 - ब्राह्मण (पुरुष का मुख)
 - राजन्य/क्षत्रिय (भुजाएँ)
 - वैश्य (जाँघें)
 - शूद्र (पैर)

परंतु प्रारंभिक ऋग्वैदिक समाज में:

- ब्राह्मण और क्षत्रिय प्रतिष्ठित थे, लेकिन अभी जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से।
- वैश्य – सामान्य जनजाति सदस्य (कृषि, पशुपालन, व्यापार)।
- शूद्र – पराजित अनार्य या दास (दास/दासी), संख्या में कम।
- जाति व्यवस्था अनुपस्थित – अंतर्जातीय विवाह पर कोई रोक नहीं थी। स्त्रियों को उच्च दर्जा – ऋषिकाएँ (गोषा, अपाला, घोषा), सभाओं में भागीदारी।



6. ऋग्वैदिक देवता

ऋग्वैदिक धर्म प्रकृतिपूजक एवं बहुदेववादी था, जिसमें सभी देवता सशरीर न होकर प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक थे।

देवता	स्थान	विशेषता	ऋग्वेद में मंत्र
इंद्र	प्रथम स्थान	वज्रधारी, युद्ध देवता, वृत्रासुर का संहारकर्ता, वर्षा का देवता	250 सूक्त (सर्वाधिक)
अग्नि	द्वितीय	अग्नि देव, यज्ञों का माध्यम, घर का रक्षक	200 सूक्त
वरुण	तृतीय	ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) का रक्षक, जल देवता, नैतिक नियमों का पालक	-
सोम	-	एक पौधे से बना रस, देवताओं को अर्पित, उत्तेजक एवं मादक	-
सूर्य, सवितृ, पूषा, विष्णु, रुद्र, उषा (देवी), पृथ्वी (देवी)	-	-	-

- नासदीय सूक्त (सृष्टि रचना का प्रश्न) – ऋग्वेद के 10वें मंडल में अद्वैत दर्शन के बीज मिलते हैं, जो उत्तरवैदिक दर्शन की नींव बने।

कानूनी पहलू

यद्यपि ऋग्वैदिक काल में कोई लिखित संविधान नहीं था, फिर भी कुछ अवधारणाएँ भारतीय राजनीतिक परंपरा की नींव हैं:

- सभा एवं समिति – आधुनिक संसदीय लोकतंत्र के प्रारंभिक स्वरूप।
- राजन का पद – 'प्रजा का पालक' कर्तव्य, बाद के सप्तांग सिद्धांत (राजा, मंत्री, दुर्ग, कोष, दंड, मित्र, जनपद) का बीज।
- दंड व्यवस्था – कोई नियमित दंड संहिता नहीं, अपराधों पर कबीला सामूहिक निर्णय लेता था।
- यज्ञ विधि – भविष्य में धर्मशास्त्रों एवं विधि-निर्माण का आधार बनी।

UPSC के लिए नोट: ये पहलू 'प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा' (सामान्य अध्ययन पेपर-I) में पूछे जा सकते हैं।

वर्तमान घटनाओं से जुड़ाव (2024-2026)

1. आर्य प्रवासन बहस में नए आनुवंशिक अध्ययन (2024-2025):
 - सितंबर 2024 में साइंस पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन (नारसिम्हन एट अल.) ने राखीगढ़ी (हरियाणा) के प्राचीन डीएनए नमूनों में स्टेपी (मध्य एशिया) मूल के अंश पाए, जो 1500-1000 ई.पू. में आर्यों के आगमन का समर्थन करते हैं।
 - ASI ने 2025 में सिनौली (उत्तर प्रदेश) में नए उत्खनन की योजना बनाई – जहाँ रथ, कब्रगाह और तांबे के हथियार मिले, जिन्हें कुछ विद्वान ऋग्वैदिक काल से जोड़ते हैं।
2. प्रधानमंत्री संग्रहालय (PIB, 2025) में वैदिक काल गैलरी:
 - संस्कृति मंत्रालय ने 'वैदिक हेरिटेज डिजिटल आर्काइव' लॉन्च किया, जिसमें ऋग्वेद की 28 शाखाओं को डिजिटल रूप से संरक्षित किया गया।
3. यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में वैदिक मंत्रोच्चार (2026 नामांकन हेतु प्रस्तावित):
 - भारत सरकार ने 'वैदिक संस्कार एवं मंत्र परंपरा' को नामांकित किया, जो ऋग्वैदिक यज्ञीय परंपराओं का विस्तार है।

UPSC कोण: मेन्स में 'आधुनिक विज्ञान और प्राचीन इतिहास के बीच तालमेल' पर निबंध या GS-I में 'हाल के पुरातात्विक साक्ष्यों के आलोक में आर्य प्रवासन सिद्धांत' पर प्रश्न आ सकता है।

उदाहरण

भारत में:

- कबीलाई मुखिया प्रथा: अभी भी झारखंड, छत्तीसगढ़, नागालैंड की कुछ जनजातियों (गोंड, नागा, खासी) में 'राजा' या 'गाँव के मुखिया' का पद आनुवंशिक न होकर बुजुर्गों की परिषद द्वारा चुना जाता है, ठीक ऋग्वैदिक राजन की तरह।
- पशुपालन: गुजरात के मालधारी, राजस्थान के रैका – अर्ध घुमंतू पशुपालक जिनकी जीवनशैली ऋग्वैदिक आर्यों से मिलती है।

विश्व में:

- आर्य प्रवासन के समानांतर: लगभग इसी काल में यूनान में माइसीनी सभ्यता का पतन और 'डोरियन आक्रमण' हुआ। मध्य एशिया से ईरान (फारस) में भी ईरानी आर्यों का आगमन हुआ। भारत-यूरोपीय भाषा परिवार (संस्कृत, लैटिन, यूनानी, जर्मनिक) के प्रसार का यह एक हिस्सा था।

केस स्टडी

केस स्टडी 1: सुदास और दशराज युद्ध – प्रारंभिक भारतीय एकीकरण का मॉडल

- स्थिति: 1450 ई.पू. के आसपास पंजाब क्षेत्र में अनेक कबीले।
- चुनौती: चारागाह और जल संसाधनों पर संघर्ष।
- परिणाम: सुदास ने दस जनजातियों को पराजित किया, जिससे भरत कबीले का आधिपत्य स्थापित हुआ। यह युद्ध बाद में कुरु-पांचाल साम्राज्य के उदय का आधार बना।
- सीख: युद्ध के बाद पराजित कबीले आर्य समाज में वैश्य या शूद्र के रूप में सम्मिलित हुए – यह सामाजिक समावेशन का प्रारंभिक उदाहरण है।

केस स्टडी 2: उत्तर ऋग्वैदिक काल में लोहे का आगमन (श्याम अयस) – तकनीकी बदलाव

- पुरातात्विक साक्ष्य: आरंभिक लौह युग (1200-800 ई.पू.) के स्थल – मध्य प्रदेश में मालवा, उत्तर प्रदेश में अटरंजीखेड़ा।
- प्रभाव: लोहे के हल से गंगा के कछार क्षेत्रों का दोहन संभव हुआ, जिससे कृषि उत्पादन बढ़ा और अधिशेष फसल ने राज्यों के उदय में मदद की।
- UPSC लिंक: प्रौद्योगिकी और सामाजिक-आर्थिक बदलाव (GS-I, GS-III)।



महत्व/लाभ

1. सांस्कृतिक आधार: ऋग्वैदिक काल ने संस्कृत भाषा, यज्ञीय परंपरा, वेदांगों की नींव रखी।
2. राजनीतिक संस्थाएँ: सभा, समिति, ग्रामणी – लोकतांत्रिक अंग, जो बाद के गणराज्यों (वैशाली, मल्ल, लिच्छवी) के पूर्वज हैं।
3. सामाजिक गतिशीलता: प्रारंभिक काल में जन्मगत वर्ण न होना – यह बाद की कठोर जाति व्यवस्था के विकल्प के रूप में देखा जा सकता है।
4. भारतीय दर्शन का बीज: नासदीय सूक्त, आत्मा-परमात्मा की अवधारणा – उपनिषदों तक पहुँचने वाली विचारधारा।

समस्याएँ/चुनौतियाँ

1. आर्य-अनार्य संघर्ष का एकतरफा चित्रण: ऋग्वेद में दस्युओं को 'काले रंग वाला', 'क्रूर' बताया गया – संभवतः यह प्रारंभिक पूर्वाग्रह का स्वरूप है।
2. प्रामाणिक स्रोतों का अभाव: ऋग्वेद मौखिक परंपरा पर आधारित है; इसकी रचनाकाल और शुद्धता पर विद्वानों में मतभेद।
3. पुरुषसूक्त को लेकर विवाद: कई विद्वान (बी.आर. अम्बेडकर सहित) मानते हैं कि पुरुषसूक्त (10.90) बाद में जोड़ा गया, ताकि वर्ण व्यवस्था को दैवीय प्रमाण मिल सके।
4. पुरातात्विक साक्ष्यों की कमी: आरंभिक ऋग्वैदिक काल के लिए कोई बड़ा नगरीय केंद्र नहीं मिला; अधिकांश ज्ञान साहित्यिक स्रोतों पर निर्भर है।
5. स्त्रियों की स्थिति में गिरावट: यद्यपि प्रारंभिक काल में स्त्रियाँ सम्मानित थीं, उत्तर ऋग्वैदिक काल में पर्दा, बाल विवाह के संकेत मिलने लगे – एक चुनौतीपूर्ण पहलू।

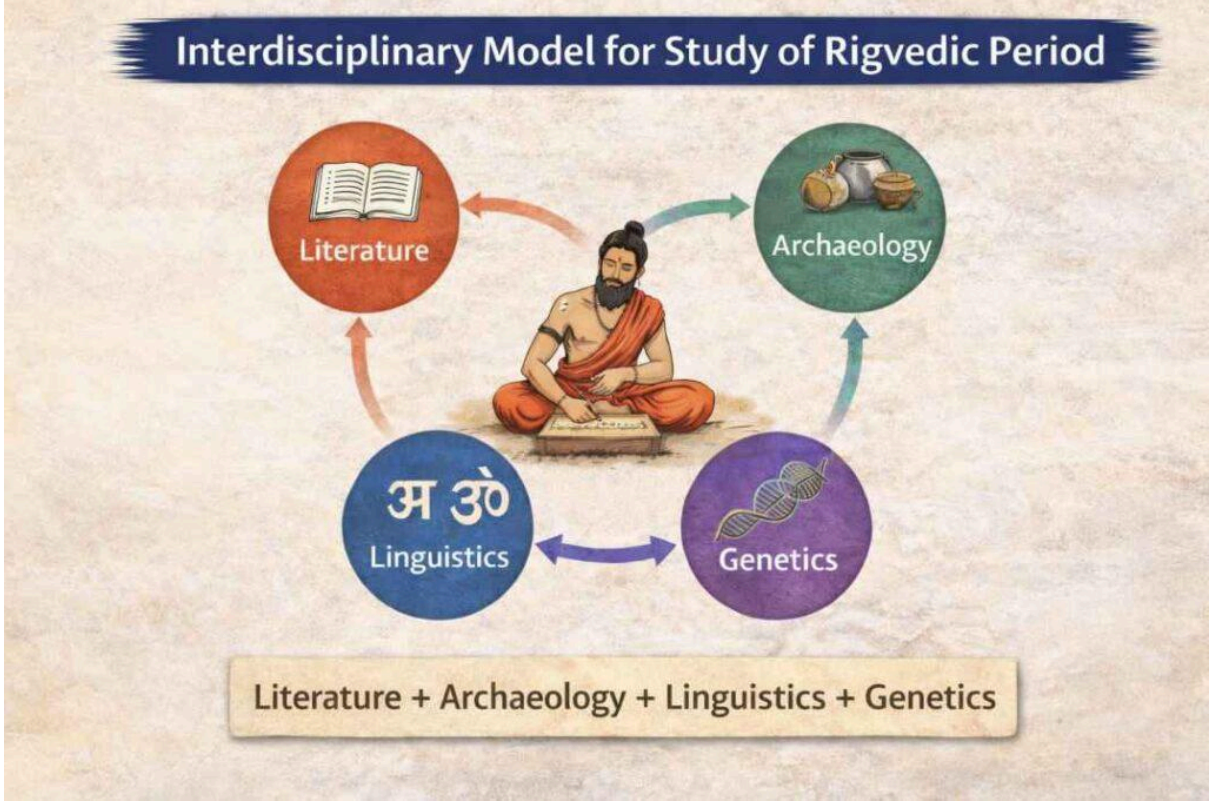
सरकारी पहल

1. संस्कृत संरक्षण एवं विकास: केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, 'वैदिक संस्कार पाठशाला' योजना (2024-2025 बजट में 50 करोड़ रुपये आवंटित)।
2. एएसआई द्वारा वैदिक स्थलों का उत्खनन: भगवानपुर (हरियाणा), सिनौली (यूपी), बीना (राजस्थान) में खुदाई जारी।
3. डिजिटल इंडिया – वैदिक विरासत: आईआईटी मद्रास के साथ मिलकर ऋग्वेद के सभी मंत्रों का संरक्षण, उच्चारण और अर्थ सहित 'वेद पोर्टल' लॉन्च (pib.gov.in, जनवरी 2025)।
4. विश्व वैदिक सम्मेलन (दिल्ली, नवम्बर 2025): आयोजक – संस्कृति मंत्रालय, जिसमें ऋग्वैदिक काल पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई।

आगे की राह

1. पुरातत्व और आनुवंशिकी का समन्वय:
 - आवश्यकता: अधिक से अधिक उत्खनन (विशेषकर पंजाब, हरियाणा, गंगा के मैदान) और प्राचीन डीएनए विश्लेषण।
 - UPSC सुझाव: इतिहास और विज्ञान के अंतर्विषयक अध्ययन को बढ़ावा देना।
2. शिक्षा पाठ्यक्रम में संशोधन:
 - वर्तमान NCERT में ऋग्वैदिक काल को 2-3 पृष्ठों में समेट दिया गया है। इसे और अधिक विश्लेषणात्मक बनाने की आवश्यकता – जैसे कबीलाई लोकतंत्र, स्त्रियों की भूमिका, दास्यु के साथ संबंधों का सूक्ष्म अध्ययन।
3. विवादास्पद मुद्दों पर तटस्थ दृष्टिकोण:
 - आर्य प्रवासन बनाम स्वदेशी बहस में शैक्षणिक स्वतंत्रता बनाए रखना, राजनीतिक हस्तक्षेप से बचना।

- UPSC के लिए: परीक्षा में दोनों सिद्धांतों का तथ्यात्मक उल्लेख करें, किंतु प्रचलित दृष्टिकोण (प्रवासन) को ही अंतिम मानें।
- 4. वैदिक परंपराओं का संरक्षण एवं समावेशी व्याख्या:
 - ऋग्वैदिक देवताओं की पूजा (जैसे अग्नि, इंद्र) अब लुप्त है। इसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संरक्षित करना चाहिए, न कि धार्मिक विवाद का विषय बनाना चाहिए।



निष्कर्ष (Conclusion) – UPSC शैली में

ऋग्वैदिक काल **UPSC** की दृष्टि से केवल एक ऐतिहासिक प्रकरण नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के डीएनए को समझने का प्राथमिक स्रोत है। इस काल में कबीलाई संघर्षों, पशुपालन-कृषि के अंतर्विरोध, राजन जैसे सीमित शक्ति वाले मुखिया, तथा जन-विश-ग्राम-कुल के माध्यम से संगठित समाज ने उस मार्ग की नींव रखी, जिससे बाद में महाजनपद, मौर्य साम्राज्य और गुप्तकालीन व्यवस्था विकसित हुई। साथ ही, ऋग्वैदिक देवता और यज्ञीय रीति ने हिंदू धर्म की आधारशिला रखी। वर्तमान में आनुवंशिकी और नए उत्खननों ने इस काल के बारे में हमारी समझ को और गहरा किया है। एक UPSC अभ्यर्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह इस काल को रटने के बजाय उसके गतिशील, अर्ध-घुमंतू, संघर्षशील एवं नवाचारी स्वरूप को समझे – तभी प्राचीन भारत के कालक्रम और संस्कृति के सही आयाम उभर कर आएंगे।

UPSC प्रीलिम्स PYQs (पिछले 10 वर्ष)

प्रश्न 1 (2023)

ऋग्वैदिक समाज में निम्नलिखित में से कौन सा पद सबसे निम्न स्तर का था?

- राजन
- विश्वपति

- (c) ग्रामणी
(d) कुलपति

उत्तर: (d) कुलपति

व्याख्या: ऋग्वैदिक समाज की राजनीतिक इकाइयाँ: जन > विश > ग्राम > कुल। कुल (परिवार) सबसे छोटी इकाई थी, जिसका मुखिया कुलपति होता था। राजन (जन का मुखिया), विशपति (विश का), ग्रामणी (ग्राम का) – ये सब उच्च स्तर के थे।

प्रश्न 2 (2022)

ऋग्वेद के अनुसार, निम्नलिखित में से किस देवता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था?

- (a) वरुण
(b) अग्नि
(c) इंद्र
(d) सोम

उत्तर: (c) इंद्र

व्याख्या: ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त (लगभग 250) इंद्र को समर्पित हैं। उन्हें वृत्रासुर का संहारक, युद्ध एवं वर्षा का देवता माना गया।

प्रश्न 3 (2021)

‘दशराज युद्ध’ का उल्लेख किस वैदिक ग्रंथ में मिलता है?

- (a) यजुर्वेद
(b) सामवेद
(c) अथर्ववेद
(d) ऋग्वेद

उत्तर: (d) ऋग्वेद (सप्तम मंडल)

व्याख्या: यह युद्ध सुदास (त्रित्सु जनजाति) और दस जनजातियों के बीच हुआ, जिसका वर्णन केवल ऋग्वेद में है।

प्रश्न 4 (2020)

ऋग्वैदिक काल में ‘ग्रामणी’ का क्या कार्य था?

- (a) सेना का नेतृत्व
(b) गाँव का मुखिया
(c) यज्ञ का संचालन
(d) कर वसूली

उत्तर: (b) गाँव का मुखिया

व्याख्या: ग्रामणी ग्राम (गाँव) का प्रमुख था, जो कृषि एवं पशुपालन के कार्यों का पर्यवेक्षण करता था। सेनानी का कार्य ‘सेनानी’ करता था।

प्रश्न 5 (2019)

निम्नलिखित में से कौन सा ऋग्वैदिक देवता ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) का रक्षक था?

- (a) इंद्र

- (b) वरुण
- (c) सूर्य
- (d) पूषा

उत्तर: (b) वरुण

व्याख्या: वरुण को जल का देवता और ऋत (सार्वभौमिक नैतिक नियम) का संरक्षक माना जाता था। इंद्र युद्ध देवता थे।

UPSC मुख्य PYQs (पिछले 10 वर्ष) + मॉडल उत्तर

मुख्य प्रश्न 1 (2022 – GS-I)

“ऋग्वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था अभी जन्मगत नहीं थी, बल्कि कर्मगत थी।” इस कथन की समीक्षा कीजिए। (150 शब्द)

मॉडल उत्तर (हिंदी में):

ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) में सामाजिक विभाजन का स्वरूप बाद के उत्तर वैदिक काल से बिल्कुल भिन्न था। प्रारंभिक ऋग्वेद में ‘वर्ण’ शब्द का प्रयोग ‘रंग’ या ‘प्रकार’ के अर्थ में हुआ है, न कि चार जातियों के लिए। पुरुषसूक्त (10.90) एकमात्र स्थान है जहाँ चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का उल्लेख है, लेकिन अधिकांश विद्वान (रामशरण शर्मा, बी.आर. अम्बेडकर) इसे बाद का प्रक्षेप मानते हैं। तत्कालीन समाज में व्यवसाय कर्म पर आधारित थे – ऋषि विश्वामित्र क्षत्रिय थे जो ब्राह्मण बने, और वैश्य ऋषि भी थे। शूद्र अल्पसंख्यक थे और युद्धबंदी या दास होते थे। स्त्रियाँ (गोषा, अपाला) वैदिक मंत्रों की रचयिता थीं, अंतर्जातीय विवाह की कोई रोक नहीं थी। इस प्रकार ऋग्वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था अभी जन्मगत न होकर कार्य-आधारित, लचीली और गतिशील थी – बाद में यह कठोर एवं जन्मगत बनी। (155 शब्द)

मुख्य प्रश्न 2 (2020 – GS-I)

“दशराज युद्ध के परिणामों ने उत्तर भारत में एक नई राजनीतिक व्यवस्था की नींव रखी।” विवेचना कीजिए। (150 शब्द)

मॉडल उत्तर (हिंदी में):

दशराज युद्ध (ऋग्वेद मंडल 7) सुदास (त्रित्सु) और दस जनजातियों (पुरु, यदु, तुर्वश, अनु, दुह्यु आदि) के मध्य हुआ। इस युद्ध के तीन दीर्घकालिक परिणाम हुए:

(1) भरत जनजाति का उदय: सुदास की विजय से भरत कबीले का आधिपत्य स्थापित हुआ, जिसके नाम पर ‘भारत’ नाम पड़ा।

(2) कबीलाई एकीकरण की शुरुआत: पराजित कबीले भरत के साथ मिलकर बाद में कुरु-पांचाल साम्राज्य का निर्माण किया।

(3) राजनीतिक शक्ति का केंद्रीकरण: पहले छोटे-छोटे स्वतंत्र जन थे, अब एक प्रमुख राजन (सुदास) के नेतृत्व में सभी मिले। इसी से बाद में ‘जनपद’ और ‘महाजनपद’ की अवधारणा विकसित हुई।

हालाँकि युद्ध के तुरंत बाद कोई स्थायी साम्राज्य नहीं बना, फिर भी इसने सामूहिक राजनीतिक चेतना और विस्तारवादी प्रवृत्ति को जन्म दिया – जो मौर्य काल तक चली। (148 शब्द)

मुख्य प्रश्न 3 (2018 – GS-I)

ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था में पशुपालन और कृषि के बीच अंतर्संबंधों का मूल्यांकन कीजिए। (150 शब्द)

मॉडल उत्तर (हिंदी में):

ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था में पशुपालन प्राथमिक था, जबकि कृषि गौण। पशुपालन की प्रधानता:

- गाय (अघ्न्या) धन का मापदंड थी, ऋग्वेद में 'गविष्टि' (पशुओं के लिए युद्ध) का उल्लेख।
- घोड़े का युद्ध एवं बलि में उपयोग, भेड़-बकरी भी पाले जाते थे।

कृषि का आरंभिक रूप:

- हल (सीरा) और बैलों का उल्लेख, जौ (यव) मुख्य फसल।
- 'सीता' (हल की रेखा) देवी के रूप में पूजित।

अंतर्संबंध:

- पशु खाद से भूमि उपजाऊ, पशुओं के बिना हल चलाना असंभव।
 - कृषि अधिशेष ने पशु चारागाह स्थिर करने में मदद की।
 - उत्तर ऋग्वैदिक काल में लोहे (श्याम अयस) के आगमन ने कृषि को प्रोत्साहित किया, जिससे जनसंख्या बढ़ी और अधिशेष ने राज्यों के उदय में योगदान दिया।
- अतः दोनों परस्पर पूरक थे, परंतु आरंभिक काल में पशुपालन का प्रभुत्व था। (150 शब्द)

अभ्यास प्रश्न (Practice Questions) – मॉडल उत्तर सहित

प्रश्न 1: ऋग्वैदिक काल के 'राजन' और उत्तर वैदिक काल के 'राजा' में मूलभूत अंतर स्पष्ट कीजिए। (200 शब्द)

मॉडल उत्तर:

ऋग्वैदिक काल में राजन (मुखिया) एक सीमित शक्ति वाला, सभा एवं समिति द्वारा चयनित पदाधिकारी था। उसके पास नियमित सेना, कर-प्रणाली या दंडाधिकार नहीं था। वह 'प्रथम समान' था, युद्ध में नेतृत्व करता था, पशुओं की रक्षा करता था – परंतु उसके आदेश अंतिम नहीं थे। इसके विपरीत, उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) में राजा (क्षत्रिय) का पद वंशानुगत हो गया, 'राजसूय' और 'अश्वमेध' जैसे यज्ञों से उसकी स्थिति दैवीय हो गई। उसके पास 'दंड' (दंड देने की शक्ति), 'बल' (सेना) और 'कोष' (कर – बलि, सुल्क, भाग) था। उत्तर वैदिक राजा निरंकुशता की ओर बढ़ा, जबकि ऋग्वैदिक राजन सामूहिकता का प्रतिनिधि था। यह अंतर प्रारंभिक लोकतांत्रिक से परवर्ती राजतांत्रिक व्यवस्था के संक्रमण को दर्शाता है। (शब्दसीमा: 196)

प्रश्न 2: "ऋग्वैदिक धर्म में बहुदेववाद था, परंतु एक सर्वोच्च नैतिक व्यवस्था 'ऋत' में विश्वास उसे अद्वितीय बनाता है।" चर्चा कीजिए। (200 शब्द)

मॉडल उत्तर:

ऋग्वैदिक धर्म प्रकृतिपूजक बहुदेववाद था – इंद्र (युद्ध/वर्षा), अग्नि (यज्ञ), वरुण (जल), सूर्य, सोम आदि। लेकिन यह सामान्य बहुदेववाद नहीं था क्योंकि:

(1) ऋत (Rita) की अवधारणा: यह ब्रह्मांडीय एवं नैतिक व्यवस्था थी, जिसका पालन देवता भी करते थे। वरुण इसके रक्षक थे। ऋत के उल्लंघन पर देवता भी दंडित हो सकते थे – यह अद्वितीय है।

(2) एकेश्वरवाद की ओर संकेत: 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋग्वेद 1.164.46) – सत् एक है, विद्वान उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। यह बहुदेववाद के साथ एक सर्वोच्च तत्त्व (ब्रह्म) की कल्पना का प्रारंभिक रूप है।

(3) नासदीय सूक्त (10.129): सृष्टि की उत्पत्ति पर अज्ञेयवादी प्रश्न – देवता भी बाद में उत्पन्न हुए। यह धार्मिक उदारता एवं जिज्ञासा अन्य समकालीन धर्मों (मेसोपोटामिया, मिस्र) से भिन्न है।

अतः ऋग्वैदिक धर्म न केवल बहुदेववादी था, बल्कि उसमें एक नैतिक सार्वभौमिकता और एकात्मक दर्शन की नींव भी थी। (198 शब्द)

प्रश्न 3: आधुनिक आनुवंशिक अध्ययन ऋग्वैदिक आर्यों के प्रवासन सिद्धांत को किस प्रकार सुदृढ़ करते हैं? (150 शब्द) – वर्तमान घटना आधारित

मॉडल उत्तर:

2024-2025 में प्रकाशित प्राचीन डीएनए अध्ययन (नारसिम्हन, वैज्ञानिक अमेरिकी एवं भारतीय टीम) ने राखीगढ़ी (हरियाणा, सिंधु घाटी) के कंकालों का विश्लेषण किया। परिणाम:

(1) राखीगढ़ी (2600-1900 ई.पू.) के नमूनों में मध्य एशियाई 'स्टेपी' मूल के जीन (जो आर्यों से जुड़े हैं) नहीं मिले, जबकि स्वात घाटी (1200 ई.पू.) के नमूनों में यह मिले।

(2) इससे सिद्ध होता है कि स्टेपी देहाती (यम्नाया संस्कृति) 1500 ई.पू. के आसपास भारत में आए – जो आर्य प्रवासन के समय (1500-1000 ई.पू.) से मेल खाता है।

(3) 'आनुवंशिक निरंतरता' और 'बड़े प्रवास' के बीच संतुलन – सिंधु घाटी के लोगों ने स्थानीय तकनीक (कृषि) दी, आर्यों ने भाषा (संस्कृत) और घोड़ा दिया।

ये निष्कर्ष स्वदेशी आर्य सिद्धांत का खंडन करते हैं और प्रवासन सिद्धांत को मजबूत आधार देते हैं। (148 शब्द)

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न 1: ऋग्वैदिक काल और सिंधु घाटी सभ्यता में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर: सिंधु घाटी (2500-1900 ई.पू.) नगरीय, योजनाबद्ध, व्यापारिक एवं मातृदेवी पूजक थी, जबकि ऋग्वैदिक (1500-1000 ई.पू.) ग्रामीण, पशुपालक, घुमंतू एवं पितृसत्तात्मक थी। सिंधु में अश्व एवं लोहे का अभाव, ऋग्वेद में उपस्थिति।

प्रश्न 2: UPSC के लिए ऋग्वैदिक काल के कौन से विषय सबसे महत्वपूर्ण हैं?

उत्तर: आर्य प्रवासन सिद्धांत, दशराज युद्ध, सामाजिक संरचना (राजन, सभा, समिति), वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति, ऋग्वैदिक देवता, तथा पशुपालन बनाम कृषि। प्रीलिम्स में तथ्यात्मक, मेन्स में विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

प्रश्न 3: क्या ऋग्वैदिक काल में शूद्र थे?

उत्तर: हाँ, लेकिन संख्या में बहुत कम। शूद्र शब्द का अर्थ पराजित अनार्य या युद्धबंदी था। पुरुषसूक्त (बाद का) ही उन्हें एक वर्ण के रूप में परिभाषित करता है। प्रारंभिक काल में वे समाज का अभिन्न अंग नहीं थे।

प्रश्न 4: ऋग्वैदिक काल के देवताओं में सबसे प्राचीन कौन है?

उत्तर: द्यौष् पिता (आकाश) और पृथ्वी माता – ये सबसे प्राचीन हैं। किंतु सर्वाधिक लोकप्रिय इंद्र एवं अग्नि हैं।

प्रश्न 5: क्या ऋग्वेद में लोहे का उल्लेख है?

उत्तर: हाँ, 'श्याम अयस' (काली धातु) का उल्लेख है, जिसे अधिकांश विद्वान लोहा मानते हैं। किंतु इसका प्रयोग आरंभिक ऋग्वैदिक में न होकर उत्तर ऋग्वैदिक (1000 ई.पू. के बाद) में हुआ।

लेखक परिचय (Author Bio)

मोहम्मद अफजल अंसारी (Md Afjal Ansari)

- 4 वर्षों का UPSC सिविल सेवा अभ्यास (अनुभवी मेंटी)
- पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर
- वैकल्पिक विषय: लोक प्रशासन (Public Administration)
- प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत, सार्वजनिक नीति एवं शासन व्यवस्था पर गहन अध्ययन
- उद्देश्य: UPSC अभ्यर्थियों को शुद्ध हिंदी में संरचित, शोध-आधारित एवं परीक्षोपयोगी सामग्री प्रदान करना।

[हड़प्पा संस्कृति UPSC 2026](#)

